शिव संदेश

जिस प्रकार भारतवर्ष में इस त्यौहार का बहुत महत्व है इसी प्रकार आध्यात्मिकता में शिव-शंकर के महत्व को जानना अत्यंत आवश्यक है। जिस प्रकार निराकार ज्योति बिंदु शिव को ही हरेक धर्मों में अलग-2 नाम से जाना जाता है। हिन्दूओं में उन्हें गॉड/ईश्वर, मुसलमान उन्हें अल्लाह या खुदा कहते हैं क्रिश्चियन्स गॉड इज लाइट कहते हैं इसी प्रकार शंकर के लिए भी हिन्दू आदिदेव, मुसलमान आदम, क्रिश्चियन्स एडम कहते हैं इससे सिद्ध होता है कि ये दोनों अलग आत्माएँ हैं; लेकिन इनको शिव-शंकर कहकर एक कर दिया है; क्योंकि एक ही शारीरिक व्यक्तित्व में प्रत्यक्ष होते हैं।

एक करने का कारण क्या है? देव-2 महादेव को ही असुरों और देवताओं सभी के बीच में समदर्शी दिखाया गया है। शिव निराकार है और वो भगवान अपना कार्य गर्भ से जन्म लेकर नहीं, बल्कि एक मुकर्रर शरीरधारी आदम में प्रवेश कर पूरा करते हैं और जिस मनुष्य शरीर का आधार लेकर वे अपना स्वर्ग बनाने का खास कार्य पूरा करते हैं, उनकी प्रवृत्ति को ही भगवान कहा जाता है, जिसे शिव-शंकर कह दिया है। सभी देवताओं में एक शंकर महादेव ही हैं जो शिव ज्योति का ध्यान करके शिव समान निराकारी स्टेज धारण कर लेते हैं जिसके लिए मुसलमानी फिकरा भी है- "***आदम को खुदा मत कहो, आदम खुदा नहीं; लेकिन खुदा के नूर से आदम जुदा नहीं।***" **अर्थात् आदम और खुदा अरस-परस हैं**। तो भगवान शिव अर्श से हर युग में नहीं आते, वे तो एक ही बार नर को पुरुषोत्तम नारायण बनाने लिए कलहयुग और सतयुग के पुरुषोत्तम संगमयुग पर आते हैं अर्थात् कलियुग अंत और सतयुग आदि के संगम पर आते हैं। वे एक ही बार अपने साकार स्वरूप में प्रवृत्त होकर नया धर्म, नई दुनिया स्वर्ग हम बच्चों के लिए स्थापन करते हैं, जहाँ सिर्फ सुख और शान्ति ही है। भगवान की बनाई हुई यही दुनिया, यही सनातन धर्म क्रमशः सत्त्व-रज-तम वाले चारों युगों का चक्कर लगाता है। भल कलियुग के अन्त में आते-2 भगवान का वह सात्विक धर्म प्रायःलोप हो जाता है; परन्तु पूरा लोप नहीं होता और यही प्रायःलोप स्थिति रहते-2 वे दुबारा इस सृष्टि में आकर, अपने साकार मुकर्रर मनुष्य-तन में प्रवृत्त होकर, पुनः नई दुनिया, नया धर्म स्थापन करते हैं, जिसे हम नं-वार बच्चे ही भोगते-2, चार युगों में बाँटकर, भ्रष्ट कलियुगी दुनिया बनाते हैं। गीता में जो "युगे-2" शब्द आया है, वह वास्तव में युग नहीं, बल्कि पुरुषोत्तम संगमयुग में ही हर युग की शूटिग का अंत है। सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग- इनके पूरे एक चक्र को एक कल्प अर्थात् चतुर्युगी कहा जाता है। वास्तव में परमपिता शिव साकार (रूप) से प्रवृत्त होकर, चतुर्युगी के अन्त में साकारी स्वरूप धारण करते हैं। कब ? कलियुग और सतयुग के संगम समय में। तभी तो कहा जाएगा कि एकमात्र भगवान ने ही नीच-ते-नीच पतित, भ्रष्टाचारी, तमोप्रधान कलियुगी दुनिया को ऊँच-ते-ऊँच पावन, श्रेष्ठाचारी, सतोप्रधान सतयुगी दुनिया बनाया। इस प्रकार श्लोक -"सम्भवामि युगे-2" का अर्थ दो युगों के बीच साबित हो जाता है। कलियुग के अन्त के भी अन्त में परमपिता परमात्मा शिव अपने साकार अणुरूप में प्रवृत्त होकर, परिष्कृत नया धर्म स्थापन करते हैं और पुराने धर्मों को नेस्तनाबूद करते हैं; इसलिए तो महाशिवरात्रि गाई जाती है।

इस प्रकार शिवरात्रि ही संसार का सबसे बड़ा त्यौहार है; लेकिन काल का प्रभाव देखिए, आज शिवरात्रि जैसे पर्व के रहस्य को तथा इससे संबंधित विश्व के मुख्यतम वृत्तांत को, जिससे कि सभी आत्माओं की काया पलट गई थी और सारी सृष्टि का नक्शा ही पलट गया, आज कोई भी विद्वान, पण्डित, आचार्य, संन्यासी या दार्शनिक नहीं जानता। आज किसी को भी ज्ञान नहीं है कि शिव का जन्म किस प्रकार कहाँ, कब और क्यों हुआ था, शिव जयंती को शिव रात्रि ही क्यों कहते हैं शंकर-रात्रि क्यों नहीं। शिव के जन्म से अलग ब्रह्मा, विष्णु तथा शंकर का जन्म क्यों नहीं मनाया जाता और शिव का दिव्य जन्म फिर कब होगा ? बल्कि आज तो मनुष्य शिव तथा शंकर की आत्माओं में भेद भी नहीं जानते और अनेक संन्यासी तथा उनके अनुयायी तो कहते हैं कि मनुष्यात्मा ही भगवान शिव है और परमात्मा शिव सर्वव्यापी है।

Contact- Mo. 9891370007 Youtube-AIVV Website-www.pbks.info

Email- a1spiritual1@gmail.com a11spiritual1@gmail.com